ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i12.2016.6309

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Social

Influence of Gandhi's philosophy on Indian society and culture
भारतीय समाज और संस्कृति पर गांधी दर्शन का प्रभाव

Dr. Pradeep Shukla Professor [*1]
[*1] Department of History Guru Ghasidas University, Bilaspur, INDIA

ABSTRACT

The harmony between East and West that Shri Ganesh and Swami Vivekananda had brought about was taken forward on a wider basis by Gandhi, Arvind, Nehru and Rabindra. They had their own way, their own working system, their efforts brought the East and the West closer to each other and hence their era is called the 'era of harmony or coordination'. All these great personalities played their role on the ideological and practical level of nation building by stressing on coordination and tolerance. The mantra of Sarvodaya that Mahatma Gandhi instilled was taken forward by Jai Prakash Narayan and Vinoba Bhave.

Gandhi philosophy has had a wide impact on Indian society and culture. Gandhiji's ideas have also found a place in the Constitution. Which has had an impact on the society. Gandhiji had studied the social problems of India, these were the problems that were hollowing out our social structure. His approach towards these problems was not narrow and regional, nor was it national but international. He was of the view that due to the failure of social reformers, their roots have become deep in the society. These evils were attacked harshly and he tried to rebuild the society.

Keywords:
Gandhian Philosophy, Indian Society, Culture.

शोध सारांश

पूर्व और पश्चिम के जिस सामंजस्य का श्री गणेश, स्वामी विवेकानन्द ने किया था, उसे व्यापक आधार पर आगे बढ़ने का कार्य गांधी, अरविन्द, नेहरू और रवीन्द्र ने किया। इनका अपना-अपना ढंग था, अपनी-अपनी कार्य प्रणाली, इनके प्रयत्न पूर्व और पश्चिम को परस्पर निकट लाए और इसलिए उनके युग को 'एक सामन्जस्य या समन्वय का युग" कहते हैं। इन सभी विभूतियों ने समन्वय और सहिष्णुता पर बल देते हुए राष्ट्र निर्माण के वैचारिक और व्यवहारिक धरातल पर अपनी भूमिका निभायी। महात्मा गांधी ने सर्वोदय का जो मंत्र फूंका उसे जय प्रकाश नारायण और विनोवा भावे ने आगे बढ़ाया।

भारतीय समाज और संस्कृति पर गांधी दर्शन का व्यापक प्रभाव पड़ा है। संविधान में गांधी जी के विचारों को भी स्थान मिला है। जिसका प्रभाव समाज पर पड़ा है। गांधी जी ने भारत की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया था, ये वे समस्याएं थी जो हमारे सामाजिक ढांचे को खोखला कर रहीं थीं। इन समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण संकीर्ण तथा क्षेत्रीय नहीं था, न ही राष्ट्रीय वरन्

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i12.2016.6309

अंतराष्ट्रीय था। उनका विचार था कि समाज सुधारकों की असफलता से इनकी जड़े, समाज में गहरी हो चुकी हैं। इन बुराईयों पर कठोर प्रहार हुए उन्होंने समाज के नव निर्माण का प्रयत्न किया।

प्रमुख शब्द – गांधीवादी दर्शन, भारतीय समाज, संस्कृति ।

Cite This Article: Pradeep Shukla Professor, "Influence of Gandhi's Philosophy on Indian Society and Culture" International Journal of Research – Granthaalayah, Vol. 4, No. 12 (2016): 164-169.

1. प्रस्तावना

पूर्व और पश्चिम के जिस सामंजस्य का श्री गणेश, स्वामी विवेकानन्द ने किया था, उसे व्यापक आधार पर आगे बढ़ने का कार्य गांधी, अरविन्द, नेहरू और रवीन्द्र ने किया। इनका अपना-अपना ढंग था, अपनी-अपनी कार्य प्रणाली, इनके प्रयत्न पूर्व और पश्चिम को परस्पर निकट लाए और इसलिए उनके युग को 'एक सामन्जस्य या समन्वय का युग" कहते हैं। इन सभी विभूतियों ने समन्वय और सहिष्णुता पर बल देते हुए राष्ट्र निर्माण के वैचारिक और व्यवहारिक धरातल पर अपनी भूमिका निभायी। महात्मा गांधी ने सर्वोदय का जो मंत्र फूंका उसे जय प्रकाश नारायण और विनोवा भावे ने आगे बढ़ाया।

भारतीय समाज और संस्कृति पर गांधी दर्शन का व्यापक प्रभाव पड़ा है। संविधान में गांधी जी के विचारों को भी स्थान मिला है। जिसका प्रभाव समाज पर पड़ा है। गांधी जी ने भारत की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया था, ये वे समस्याएं थी जो हमारे सामाजिक ढांचे को खोखला कर रहीं थीं। इन समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण संकीर्ण तथा क्षेत्रीय नहीं था, न ही राष्ट्रीय वरन् अंतराष्ट्रीय था। उनका विचार था कि समाज सुधारकों की असफलता से इनकी जड़े, समाज में गहरी हो चुकी हैं। इन बुराईयों पर कठोर प्रहार हुए उन्होंने समाज के नव निर्माण का प्रयत्न किया।

अस्पृश्यता को उन्होंने घोर अभिशाप माना, उनका विचार था कि यह 'पाप मूलक संस्था" किसी भी धर्म का अंश नहीं, बल्कि मानवता के विरूद्ध घोर अपराध है। उन्होनें लोगों से कहा था कि 'अगर आपको विश्वास हो कि अस्पृश्यता, हिंदू धर्म पर कलंक कालिमा हैं और इससे हिन्दू धर्म के नष्ट हो जाने का खतरा हैं तो अस्पृश्यता को हटाने का काम हर हालत में शुरू कर दीजिये। वे मानते थे कि 'अस्पृश्यता दूर करने का अर्थ सिर्फ इतना ही नहीं कि हम जिन्हें अस्पृश्य मानते हैं उन्हें छूने लगें बल्कि यह है कि हम ऊंच-नीच का भाव भूल जायें।" गांधी जी अस्पृश्यता के विरूद्ध अभियान को उच्च भावनात्मक और यथार्थवादी स्तर तक ले गए। अपने प्रयास में उन्हें महान सफलता मिली और स्वतंत्र भारत के संविधान अनुच्छेद 17 में किसी भी रूप में अस्पृश्यता के पालन को दंडनीय अपराध घोषित किया गया हैं। अस्पृश्यता निवारण के लिए उन्होनें हरिजनों के मंदिर प्रवेश को सबसे अधिक महत्व दिया।

महात्मा गांधी के तीन अमोध अस्त्र थे-सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह। इनका प्रयोग उन्होनें देश को शांतिमय तरीके से स्वराज्य तक पहुंचाने में किया। महात्मा गांधी ने मानवतावादी धर्म का पोषण किया जिसमें ऊंच-नीच, जाति भेद, रंग भेद के लिये कोई स्थान न था। स्वतंत्र भारत में सामाजिक समानता के लिये अनुच्छेद 15(2) के अंतर्गत विधान है। इसके अंतर्गत किसी भी रूप में नागरिकों से भेदभाव नहीं किया जायेगा। संसद में 1955 में अस्पृश्यता अपराध अधिनियम पारित कर पूर्व की कमियां को दूर किया है।

गांधी दर्शन में स्त्री पुरुष का समान दर्जा है और एक के अस्तित्व का औचित्य दूसरे के बिना सिद्ध नहीं होता। गांधी जी ने स्त्रियों को पुरूष के समान ही अधिकार और आजादी देने का पक्ष लिया। संविधान के अनुच्छेद 39 में नागरिक समानता की बात स्वीकार की गयी है। आजीविका के समान अवसर और समान कार्य के लिये समान वेतन, स्त्रियों को प्रसूति अवस्था में सहायता का प्रावधान किया है। अतः गांधी जी के नारी कल्याण के दर्शन का प्रभाव भी समाज पर व्यापक रूप से पड़ा है। गांधी जी ने पर्दा प्रथा पर आघात किया। उनका विचार था कि स्त्रियां चरित्र योग्यता तथा विवेक के उच्च गुणों से स्वयं को आभूषित करें। गांधी ने भारत की एक और सामाजिक समस्या, विधवा पुनर्विवाह, पर भी ध्यान दिया। उन्होनें इस बात पर जोर दिया कि विधवाओं को बेहिचक पुनर्विवाह की अनुमति मिलनी चाहिये। इस संबंध में स्वतंत्र भारत में अधिनियम भी बनाया गया है। वस्तुतः गांधी जी भारतीय समाज के कुछ अंगों तथा देश के कुछ भागों में प्रचलित बाल विवाह के भी विरोधी थे। बाल विधवाओं के अस्तित्व का प्रमुख कारण वे बाल विवाह को मानते थे। भारत की स्वतंत्रता के बाद बाल विवाह निषेध के अधिनियम बनाये गये। पिछड़ी हुई जातियों के लिये शिक्षा व आर्थिक हितों की विशेष उन्नति के लिये अनुच्छेद 46 में विधान किया गया है।

उन्होनें दहेज प्रथा का विरोध किया, इसे सौदेबाजी कहा करते थे। उनका विचार था कि इस प्रथा ने अनेक सामाजिक समस्याएं पैदा की है विशेषकर समाज के कमजोर वर्गों के लिये। दहेज विरोधी अधिनियम द्वारा आधुनिक भारत में स्त्रियों के अधिकारों की रक्षा की गई है व दहेज संबंधी अपराधों को दंडनीय बनाया गया है। गांधी की दृढ़ धारणा थी कि मदिरापान बहुत बड़ी बुराई है। उनकी राय में नशे के लिये दवाओं का इस्तेमाल तथा मदिरापान शैतान की दो भुजाएं है जिनके द्वारा यह मानव पर करारी चोट करता है। वे मानते थे कि मदिरापान से शरीर और आत्मा दोनों की क्षति होती है, इसलिये व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिये ही यह सर्वाधिक हानिकारक है। गांधीवादी सिद्धांतों को व्यवहार में लाते हुए संविधान में अनुच्छेद 47 द्वारा प्रावधान किया गया है। अनेक राज्यों में मद्यनिषेध किया गया है। गांधी को पूर्ण विश्वास था कि भारतवासियों की बहुत सी सामाजिक समस्याओं का समाधान उत्तम शिक्षा पद्धति से हो सकता है-ऐसी पद्धति जो भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप हो। उनकी दृष्टि में समाज का सुधार केवल वही पद्धति कर सकती है जो व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता, विशद दृष्टिकोण, सरलता तथा सुलह सफाई की भावना पर जोर दे। गांधी का दर्शन सकारात्मक था जिसका प्रभाव समाज पर पड़ा है. उनके द्वारा बताये गये पंद्रह सूत्री निर्माणकारी कार्यक्रमों में से सभी, किसी न किसी

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i12.2016.6309

रूप में समाज में किये जा रहे हैं। कुछ को कानून में भी शामिल किया गया है।

2. भारतीय राजनीति तथा गांधी दशन निर्माणकारी कार्यक्रम इस प्रकार थे

खादी का प्रचार-प्रसार, ग्रामोद्योगों को प्रोत्साहन, ग्राम स्वच्छता तथा स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान, बुनियादी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, नरी उद्धार समग्र ग्राम सेवा (जिसके अंतर्गत खादी, कुटीर उद्योग, स्वच्छता के साथ ही कृषि, पशुधन सुधार, आर्थिक समानता आदि का कार्यक्रम भी लागू करना है।) राष्ट्रभाषा प्रचार, मातृ-भाषा प्रेम, आर्थिक समानता को प्रोत्साहन, सांप्रदायिक एकता, अछूतोद्धार, नशाबंदी, आदिवासी सेवा, मजदूर तथा किसान एवं विद्यार्थी संगठन बनाना। गांधी ने निर्माणकारी कार्यों को सत्याग्रह का अभिन्न अंग बताया। महात्मा गांधी का सत्याग्रेह दर्शन सत्य के सर्वोच्च आदर्श से उत्पन्न हुआ है। सत्याग्रह का अहिंसात्मक प्रतिशोध से लिया जा सकता है परन्तु इस रूप में भी यह काफी व्यापक है। यह नैतिक अस्त्र है जिसका आधार है आत्मिक शक्ति की श्रेष्ठता। सत्याग्रह की विभिन्न प्रणालियां है तथा तकनीकें बहुमुखी है। असहयोग हड़ताल, सामाजिक एवं आर्थिक बहिष्कार, धरना, नागरिक अवज्ञा, हिजरत, उपवास आदि साधनों के माध्यम से सत्याग्रह किया जाता है। जिसका प्रभाव आज भी हमारे समाज में देखा जा सकता है। 'हड़ताल" एक प्रतीक का कार्य करती है। इसका उद्देश्य कार्य को बंद करके जनता, सरकार और संबंधित संस्था के मस्तिष्क को प्रभावित करना है। लेकिन आवश्यक है कि हड़तालें जल्दी जल्दी न की जाएं अन्यथा उनका प्रभाव समाप्त हो जाएगा। हड़ताले पूर्णतः स्वेच्छापूर्वक व अहिंसात्मक प्रचार का परिणाम होनी चाहिये। 'सामाजिक बहिष्कार" समाज के उन कलंकित लोगों का बहिष्कार करना है जो जनमत की अवहेलना करते है परन्तु इसका उग्र रूप से तथा अल्पमत के विरूद्ध प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। 'धरना" गांधी ने जिस धरना को स्वीकार किया वह अहिंसक धरना है। जिसका उद्देश्य है कि वह जनमत को जगाए, उपयुक्त वातावरण बनाए व हृदय परिवर्तन के द्वारा वस्तु स्थिति को समझाए । नागरिक अवज्ञा व उपवास भी सत्याग्रह के अंग है। उपवास में विपक्षी को कष्ट न देकर स्वयं कष्ट सहन किया जाता है। यह आत्म पीड़न विपक्षी के हृदय में न्याय और सत्य को जगाता है।

वत्तुतः गांधी दार्शनिक ही नहीं, वरन् व्यावहारिक आदर्शवादी थे। उनकी शिक्षाओं और विचारों का आधुनिक भारत के समाज और संस्कृति पर विशेष प्रभाव पड़ा है। भारतीय संविधान में राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों का मुख्यतया गांधीवादी सिद्धांतों के आधार पर किया गया है। गांधी शक्तियों के विकेन्द्रकरण और पंचायती राज्य के पक्ष में थे। उनका विचार था कि राम राज्य का मार्ग ग्राम राज्य से होकर जाता है। मध्यप्रदेश में जिला पंचायतों के माध्यम से जन-जन तक न्याय सुलभ कराने का प्रयास किया गया है। गांधी सांप्रदायिक एकता में विश्वास रखते थे अतः भारतीय संस्कृति को बनाये रहते हुए भारत को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। भारत सरकार की विदेश नीति का प्रमुख आधार अंर्तराष्ट्रीय सहयोग है। गांधी के बातों को ध्यान में रखकर ही कोरिया, हिन्द चीन, मिस्त्र, फिलस्तीन आदि में शांति स्थापना में भारत सरकार ने उल्लेखनीय योगदान किया। रोमा रोला के अनुसार ।

'गांधी ही केवल भारत के राष्ट्रीय इतिहास के ऐसे नायक है जिनकी 'किंवदंतिया" युगों तक प्रसिद्ध होगी। उन्होनें समस्त मानवता के संतो और महात्माओं में अपना स्थान प्राप्त किया है और उसके व्यक्तित्व का प्रकाश विश्व में फैला हुआ है।

3. संदर्भ सूची

[1] गांधी का दर्शन-प्रताप सिंह. पृ. 24

[2] महात्मा गांधी जीवन और दर्शन-मूल लेखक-रोमारोला अनुवादक-प्रफुल्ल बंद ओझा (युक्त) पृ. 13

[3] गांधी का शिक्षा दर्शन-डॉ. कमला द्विवेदी, पृ. 33

[4] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय-खंड 63, पृ. 40

[5] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय खंड 56. पृ. 80

[6] गांधी दर्शन-प्रानात कुमार भट्टाचार्य, पृ. 67

[7] गांधी धर्म और समाज-शंभू रत्न त्रिपाठी, पृ. 94

[8] भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास-प्रो. सी. पी. शर्मा व श्रीमती शशि प्रभा शर्मा, पृ. 251

[9] भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास-वही खंड प्प्, पृ. 59

[10] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय-खंड-41. पृ. 90

[11] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय खंड-65. पृ. 11

[12] आधुनिक भारतीय संस्कृति का इतिहास-दिनेशचंद्र भारद्वाज, पृ. 325

[13] जीवन और चिंतन-महात्मा गांधी, पृ. 425

[14] भारत का राष्ट्रीय आंदोलन एवं संवैधानिक विकास-वही, खंड प्प्, पृ. 105

[15] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय-खंड-62, पृ. 469

[16] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय खंड-56. पृ. 433

ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: 10.29121/granthaalayah.v4.i12.2016.6309

[17] महात्मा गांधी, सत्य से सत्याग्रह नक-शंकर दयाल सिंह, पृ. 23
[18] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय-खंड-42, पृ. 510
[19] अहिंसक समाजवाद की ओर महात्मा गांधी, पृ. 133
[20] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय-खंड-43, पृ. 156
[21] सम्पूर्ण गांधी वाड्मय-खंड-56. पृ. 191